ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 200-202

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

वैदिक एवं बौद्ध शिक्षा में तुलना

विनोद कुमार दूबे

असि0 प्रोफे0, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, कल्ली देवी पी0जी0 कालेज, टिकरी जिगना, मिर्जापुर (उ0प्र0) भारत

Received- 04.12.2019, Revised- 08.12.2019, Accepted - 14.12.2019 E-mail: sunilchaturvedi2019@gmail.com

सारांश : *तुलनात्मक शिक्षा का उद्देश्य ''उन निहित सिद्धान्तों की खोज करना है, जो शिक्षा की सभी राष्ट्रीय प्रणालियों के विकास को निर्धारित करती है।'' दूसरे शब्दों में एक प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन यह है जिसमें कि अन्तर या भेद पर बल दिया जाता है और दूसरे प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन ऐसा है जो कि विषमता के मध्य समता की खोज करता है। अर्थात् तुलनात्मक शिक्षा के अन्तर्गत उन सभी शक्तियों एवं कारणों का अध्ययन अपेक्षित है जो कि शिक्षा की प्रणालियों की पृष्ठभूमि में पाये जाते है। बिना इस प्रकार के अध्ययन के तुलनात्मक शिक्षा का अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता अर्थात् ये शिक्षा प्रणालिया सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा अथवा दर्शन के आधार पर विकसित होती है।*

कुंजी शब्द– तुल्नात्मक शिक्षा, राष्ट्रीय प्रणाली, शिक्षा प्रणाली, सामाजिक, राजनीतिक विचारधारा, दर्शन।

अतः भारतीय शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के तुलनात्मक रूप में हमें वैदिक एवं बौद्ध कालीन शिक्षा की ओर ध्यान देना होगा। वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मीक विकास करना था। हमारे ऋषिमुनियों ने लौकिक तथा पारलौकिक जीवन में सुन्दर सामंजस्य स्थापित किया था। लेकिन शिक्षा के अन्तर्गत आध्यात्मिकता की प्रधानता थी। उत्तर वैदिक काल में पुरोहितवाद प्रबल हो चला था और विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएँ भी विकसित होने लगी थी। इस काल में सूत्रों की रचना हुई और गूढ विषयों को सूत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। भारतीय दर्शन को छः प्रमुख शाखाओं का विकास भी उत्तर वैदिक काल में हुआ। इस प्रकार यह काल भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

जब भारतीय समाज में ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ा तब ब्राह्मणीय शिक्षा का विकास हुआ। ब्राह्मणीय शिक्षा ने चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल दिया था और इसके लिए गुरू शिष्य सम्बन्ध की ओर समुचित ध्यान दिया गया। इसके अतिरिक्त ब्राह्मणीय शिक्षा ने आध्यात्मिक जीवन के साथ–साथ सामाजिक जीवन की ओर भी ध्यान दिया। फिर भी अपेक्षाकृत सामाजिक जीवन की कुशलता की उपेक्षा की गयी क्योंकि ब्राह्मणों ने धार्मिक कर्मकाण्ड को अधिक महत्व दिया था। जो भी हो इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि ब्राह्मणी शिक्षा ने व्यक्ति के चारित्रिक विकास को उच्च स्थान दिया और इसके लिए गुरू शिष्य सम्बन्ध और नैतिक अनुशासन को प्रमुख साधन बनाया।

भारत में जब बौद्धों का प्रभाव बढ़ा तब बौद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। बौद्ध शिक्षा प्रणाली एक प्रकार से ब्राह्मणीय शिक्षा की प्रतिक्रिया थी और इसने यह प्रयास किया कि शिक्षा सभी वर्गो के लिए समान रूप से उपलब्ध हो। जैसा कि हमें ज्ञात है कि बौद्ध धर्म ब्राह्मणों की सर्वोपरिता को स्वीकार नहीं करता और यह सामाजिक समता पर पर्याप्त बल देता है। इस प्रकार बौद्ध धर्म के प्रभाव के फलस्वरूप शिक्षा का जनता में अधिक प्रसार हुआ तथा लोक भाषाओं के विकास की ओर भी ध्यान दिया जाने लगा।

जब हम शिक्षा प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन करते है तब हमें यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक शिक्षा प्रणाली के मूल में कुछ ऐसे घटक होते है जो सामान्य रूप से सभी शिक्षा प्रणालियों में पाये जाते है इसी के साथ हमें यह भी ज्ञात होता है कि प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में कुछ ऐसी विशेषताए होती है जो किसी अन्य शिक्षा प्रणाली में नहीं पायी जाती है। इसलिए शिक्षा प्रणालियों का इस प्रकार विश्लेषण किया जाय जिससे कि समान एवं भिन्न तत्वों का विश्लेषण हो सके। तुलनात्मक शिक्षा के विकास में यह तथ्य निहित है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक भारतीय शिक्षा (वैदिक शिक्षा) पूर्णरूपेण गुरूकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित थी। वैदिक शिक्षा पर ब्राह्मणों का वर्चस्व था। किन्तु बौद्ध धर्म की अभ्युदय एवं क्रान्ति के साथ ही प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति में भी परिवर्तन हुआ। एक नवीन शिक्षा–प्रणाली का सूत्रपात हुआ। जिसे हम 'बौद्ध शिक्षा प्रणाली कह सकते है। यह पद्धति वैदिक पद्धति से कुछ भिन्न होते हुए भी कई अर्थो में समान कही जा सकती है।

यद्यपि बौद्ध शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रसार करना और निर्वाण प्राप्ति में सहायता पहुँचाना था, किन्तु कालान्तर में उसके उद्देश्य में हुए परिवर्तन के साथ एक सुव्यवस्थित एवं सुविकसित शिक्षाा प्रणाली का विकास हुआ।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

ब्राह्मण एवं बौद्ध शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं, यथा विद्यार्थी का चयन एवं आयु, अध्ययन काल, दैनिक दिन चर्या, शिक्षक एवं छात्र की योग्यताएँ, कर्तव्य, पाठ्यक्रम आदि की विवेचना करने पर हम पाते है कि सामान्य रूप से ब्राह्मणीय एवं बौद्ध शिक्षा–पद्धति में न तो कोई अधिक अन्तर है और न ही दोनों में अधिक समानता। अर्थात् जहॉ दोनों में अनेक समानताएं है– वहीं दोनों में महत्वपूर्ण अन्तर भी है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली को वैदिक (ब्राह्मणीय) शिक्षा–पद्धति का ही एक संशोधित रूप कह सकते है। दोनों शिक्षा पद्धतियों की समानताओं एवं असमानताओं की संक्षिप्त चर्चा अप्रासंगिक न होगी– ब्राह्मण व बौद्ध शिक्षण संस्थाओं में गुरू–शिष्य परम्परा के एक सामान्य नियम थे। पर दोनों प्रकार की शिक्षण संस्थाओं के चरित्र में मूल अन्तर था। जैसे ब्राह्मण परम्परा में गुरुकुलों में गुरु–शिष्य के व्यक्तिगत सम्बन्ध मुख्य माने गये। इस व्यक्तिगत सम्बन्ध के कारण गुरू के द्वारा शिक्षा पाने वाले शिष्यों की संख्या सीमित होती थी। जबकि बौद्ध–बिहारों में सामाजिक शिक्षा की परम्परा थी। बौद्ध बिहार या संघ में सामूहिक शिक्षा एवं सामूहिक अनुशासन की परम्परा थी, जहॉ बौद्ध भिक्षुओं की असीमित संख्या होती थी। बौद्ध बिहार एक स्वायत्त संस्था थे। इसका अपना एक कृषिफार्म होता था, छात्रों के भोजन की व्यवस्था होती थी, जिसमें विभिन्न वर्गो का सहयोग रहता था। जातकों में धनवान बालकों के लिए शिक्षक द्वारा भोजन तथा निवास के प्रबन्ध का वर्णन मिलता है। भगवान बुद्ध ने भी शिष्यों के समस्त भार उपाध्याय के सिर रखने का आदेश दिया है। इसका समर्थन मिलिन्दपंण्ह से भी होता है। इस तरह बौद्ध परम्परा में बाहरी संगठन की अधिक आवश्यकता थी। इसके विपरित ब्राह्मण परम्परा में गुरूकुल या आश्रम एक घर के समान होते थे। जिसमें बाहरी सहायता या सामूहिक संगठन की कोई आवश्यकता नहीं थी। बौद्ध शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दोष यह था कि इनके बौद्ध बिहारों में गुरूकुल या आश्रम के समान पारिवारिक स्नेह एवं घरेलू सम्बन्धों का अभाव मिलता है। इसी प्रकार बौद्ध शिक्षा पद्धति में धार्मिकता का आधिक्य एवं जीवनोपयोगी औद्योगिक एवं कला कौशल मयी शिक्षा की हीन स्थिति। इसके शिक्षा में सबसे बड़ा दोष सैनिक–शिक्षा की अवहेलना तथा भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के सह निवास के कारण क्रमशः अनाचार की वृद्धि थी।

बौद्ध संस्थाओं में धार्मिक मतानुसार सभी वर्णो को एक सी शिक्षा दी जाती थी। हिन्दू शास्त्रों की तरह प्रवेश एवं क्रम में वर्णगत भेद–भाव का सर्वथा अभाव था। इस सम्बन्ध मे विदेशी विद्वान एफ0ई0 कोई महोदय का मत विचारणीय है– ब्राह्मणीय विद्यालयों में एक मात्र अधिकार को समाप्त करने और सब जातियों के मनुष्य को शिक्षा के अवसर सुलभ करने में बौद्ध धर्म ने भारत के लोगों में सामान्य शिक्षा की इच्छा का विस्तार किया और उस मॉग को प्रोत्साहित किया। जिससे सार्वजनकि प्राथमिक विद्यालयों का विकास हुआ। ब्राह्मण शिक्षा पद्धति की भॉति बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में भी गुरू को समाज में सर्वोच्च सम्मान एवं आदर प्राप्त था। ब्राह्मण व्यवस्था में विद्यार्थियों के लिए एक निश्चित अवधि तक शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद 'समावर्तन' संस्कार के रूप में विद्यार्थी गृहस्थ जीवन की ओर मुड़ सकता था जबकि बौद्ध शिक्षण संस्थालयों में प्रायः इस प्रकार की व्यवस्थाओं का अभाव दीखता है। अतः इस दृष्टि से हम कह सकते है कि बौद्ध व्यवस्थाकार उस कल्पवृक्ष को ही काट रहे है, जिन पर सम्पूर्ण सृष्टि अवलम्बित है।

उपर्युक्त सन्दर्भो में ब्राह्मण शिक्षा तथा बौद्ध शिक्षा के स्वरूप की तुलना के परिप्रेक्ष्य से प्राप्त बिन्दुओं के सूक्ष्म तथ्य वर्णनीय है–

बौद्ध शिक्षा मठों, संघो तथा सुसंगठित शिक्षा संस्थानों में दी जाती थी। जबकि वैदिक शिक्षा गुरूकुलों, गुरूगृहों तथा आश्रमों में। वैदिक कालीन शिक्षा में पारिवारिकता अधिक थी, जबकि बौद्ध शिक्षा में संस्थागतता।

वैदिक शिक्षा अपने स्वरूप में पितृवादी थी, जबकि बौद्ध शिक्षा में थोड़ा बहुत जनतांत्रिकता का पुट था। बीस वर्ष की आयु के बाद श्रमण अपने उपाध्याय का स्वयं चुनाव कर सकता था। उपसंपदा के बाद उसे यह भी अधिकार प्राप्त हो जाता था कि वह अपने उपाध्याय के नियम भंग को भी प्रकट कर सके। वैदिक शिक्षा में शिक्षण का माध्यम संस्कृत थी और बौद्ध शिक्षा में लोक भाषा।

वैदिक शिक्षा में विद्यार्थी जीवन बहुत कठोर एवं तपोमय था, इसके विपरीत बौद्ध शिक्षा में विद्यार्थियों के लिए प्रशासन की भी व्यवस्था थी और जीवन आपेक्षिक रूप में और आराम का था।

जहॉ तक बौद्ध धर्म से सम्बन्धित शिक्षा, उसकी पद्धति, शिक्षार्थी, शिक्षक एवं शिक्षण संस्था का सम्बन्ध है, इस पद्धति की अपनी प्राथमिक स्थिति इस बात का प्रमाण देती है कि वैदिक प्रक्रिया के सामान्तर ही इन सब की स्थापना है। यहॉ शिक्षा का केन्द्र बौद्ध संघ है तथा बौद्ध भिक्षुक विद्यार्थी है। इनकी भिक्षावृत्ति ब्रह्मचारी से अलग नहीं है। केवल इनके भिन्न–भिन्न परिचय है। ब्रह्मचारी शुक्ल धवल वेश में यज्ञोपवीत धारण कर हाथ में दण्ड लेकर मुण्डित सिर लेकिन मोटी शिखा सिर पर धारण कर गृहस्थ के आंगन में आता रहा है। बौद्ध पिताम्बरी लेकिन खिन्न, उदास मन आकृति लेकर उन्हीं गॉवों में घूमता रहा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

है। बौद्ध शिक्षण पद्धति में ब्राह्मण धर्म में प्रचलित भिक्षवृत्ति को नहीं छोड़ा, न ही ब्रह्मचारी के कठोर साधना से अपना अलगाव ही प्रकट किया, थोड़ी–मोड़ी भिन्ताओं के शिवा। अन्तर है केवल पाठ्य विषयों को लेकर। यहॉ न तो कर्मकाण्ड को शिक्षण मिला, न ही युद्ध विद्या। जहॉ तक संगीत एवं ललित कलाओं का प्रश्न है, ये बौद्ध चिन्तन के सन्दर्भो से बाहर के विषय है। श्रृंगार विद्याओं का कोई परिचय बौद्ध शिक्षा पद्धति में नहीं मिलता। बौद्ध भिक्षु प्रत्यय विज्ञान द्वारा एक वृहत्तर साधना पद्धति का समर्थन करता है। इसलिए शिक्षा में धर्म गुरूओं द्वारा इसी तरह की देशनाएं एवं उद्‌बोध प्राप्त है। बौद्ध शिक्षण प्रचारात्मक है, इसलिए बौद्ध भिक्षुओं का शिक्षा प्राप्त करके, घूम–घूम कर उपदेश देना तथा राजदरबारों में जाकर अनुकूल स्थितियों का निर्माण करना इसी शिक्षण योजना का भाग रहा है। सामूहिक शिक्षण, यात्राओं का उल्लेख प्रातःकाल गृहस्थ के द्वार पर जाकर 'संघम् शरणम् गच्छामि' की घोषणा तथा बौद्ध धर्म को राज्यधर्म की तरह प्रतिष्ठित करने का यत्न, भिक्षु आचार्य तथा गण पीठ के नायक स्थाविर का उद्‌देश्य दिखता है। वैदिक धर्म न ही प्रचारात्मक है, न ही धर्म केन्द्रित। इसलिए इन दोनों ही व्यवस्थाओं को समानान्तर व्यवस्था कहना अधिक उचित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. R.K. Mookerji, The age of Imperial Unity, (Ed. R.C. Majundar) पृ0 591 पर आलेख से उद्धत।
2. जातक, 3, सं0 252, तिलमुट्ठिजातक, पृ0 6–10।
3. दीर्घनिकाय, 3, पृ0–189।
4. मिलिन्दपंण्ह, 1, पृ0 142।
5. R.K. Mookerji, The age of Imperial Unity, (Ed. R.C. Majundar) पृ0 591 पर आलेख से उद्धत।
6. प्रो0 बंशीधर सिंह, प्रो0 भूदेव शास्त्री, सिद्धान्त शिरोमणि, भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, 1957।
7. रामबाबू गुप्त, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 57
8. डा0 एच0आर0 कपाड़िया, द जैन सिस्टम ऑव एजूकेशन, जर्नल ऑव यूनिवर्सिटी ऑव बाम्बे, जनवरी 1940, पृ0 206।

*****